फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान.प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर **343** *1/–* *जनवरी* **2017**

दम वाले दम के प्रसार से शुरू करें

हम 300 जने हैं।आप हमारे लिये क्या कर सकते हो ? आप मजदूरों की क्या सहायता करते हो?

300 क्या एक फैक्ट्री से हो ?

हाँ। और कुछ हम में से आपसे आ कर मिलेंगे। पहले यह बताओ आप हमारे लिये क्या कर सकते हो ?

आप तीन सौ साथी मिल कर यह हम से क्यों पूछ रहे हैं कि हम आपके लिये क्या कर सकते हैं ? तीन सौ लोग आपस में बातचीत में हैं। तो फिर, अपने बीच में कुछ कमी पाते हैं क्या?

कमी ? कमी की बात कहाँ से आई ? हम आपस में तरह -तरह से मैनेजमेन्ट को टैन्शन में रखते हैं। हा-हा ! मैनेजमेन्ट हमें थकाने में लगी रहती है और हम उनको टैन्शन में रखते हैं।

यह तो बहुत थोड़े शब्दों में आपने थकान और टैन्शन के टकराव की सुन्दर फोटो खींची है।

इसलिये हम ने सोचा है कि आपसे पूछें कि आप हमारी क्या मदद कर सकते हैं ?

आप कह रहे हो कि किसी कमी की पूर्ति के लिये नहीं आ रहे हो। और आप कार्यस्थल की सटीक तस्वीर भी खींच रहे हो।तो, मदद किस चीज की?

मतलब ? मजदूरों की कोई सहायता ही नहीं करे?!

सहायता की बात तो तब आती है न जब अपने से नहीं कर पा रहे हों।मैं पूछ रहा हूँ कि आप क्या नहीं कर पा रहे हो ?

हा–हा ! अब आप हमें गुस्सा दिला रहे हो। यह सोचिये कि हम तीन सौ लोगों की खुशी की बात कर रहे हैं। इन 300 के साथ जुड़े हुये परिवारों और दोस्तों की खुशी की बात कर रहे हैं।

आप कुछ अटपटी बातें कर रहे हो पर यह खुशी का सवाल तो है इन्टैरैस्टिंग। खुशी को अगर मापदण्ड के तौर पर लाया जाये तो बहुत सारी चीजें अजीब और बेढँगी लगेंगी। वर्तमान को भविष्य के लिये दाँव पर लगाने की प्रवृति पर सवाल आयेंगे। खुशी के साथ-साथ और कौन से कारणों के लिये आप सहायता डिमाण्ड कर रहे हैं?

कारण ? डर होता है निकाले जाने का। फिर होता है बाउन्सरों की गुण्डागर्दी का। फिर होता है पुलिस द्वारा परेशान करने का। मदद करने वाला हमें इन सब से राहत दिलाये। उसकी जान-पहचान हो प्रशासन में। उसमें दम हो सरकार से प्रशासन पर दबाव डलवाने का।

और फिर तारीख पर तारीख। आश्वासन पर आश्वासन। थकावट पर थकावट। मदद करने वालों के पास जाने पर कोई और परिणाम निकलता क्या सुना है आपने ?

सुनने में तो नहीं आया है। लेकिन हमारे लिये शायद बात अलग रहे। हम तीन सौ का दम अलग है।

इस दम से किसी और को क्यों मजबूत कर रहे हो? इसी दम से शुरू करो और खुशी से हजारों में फैला दो।

कैसे फैलायें ? टाइम कम होता है। थकावट रहती है। लोग सुनते नहीं हैं। लोग आते नहीं हैं।

इस जटिलता को हम कमी से नहीं शुरू करें।बल्कि, शुरुआती जो आपका ''हम तीन सौ हैं'' के दम और गर्व से आरम्भ करें तो तीन-सात-पन्द्रह हजार के बीच इस दम का प्रसार होगा।

यह हम भी मानते हैं और जानते भी हैं क्योंकि हम तीन सौ बने ही ऐसे हैं। और हम तीन सौ के साथ बहुत लोग जुड़े हुये हैं। इसकी तस्वीर नहीं मिलती और शब्द नहीं मिलते। फैक्ट्री के अन्दर पहचान है। फैक्ट्री के बाहर सम्बन्ध हैं। आप हमें यहाँ मदद कर सकते हो?

यह सवाल मदद की भाषा (कोई कर देगा, कोई करवा देगा) और तरीकों (बोल देंगे, बात कर ली है, मिल लिये हैं) के बाहर है। यह दम और दम के प्रसार की बात है।

बात तो एक तरीके से ठीक ही कह रहे हो। इसमें सुन्दरता है कि दम वाले दम के प्रसार से शुरू करें।

सामान्य है यह

क्यू एच टालब्रोस (51 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में 150 डिप्लोमा ट्रेनी इंजीनियर को एक साल के लिये फिक्स तनखा पर रखते हैं , नवम्बर 2016 तक 8400 रुपये थी और दिसम्बर से 9000 है। डिप्लोमा वालों की ई एस आई तथा पी एफ नहीं हैं और यह मशीनें चलाते हैं — एक्सीडेन्ट होने पर निकाल देते हैं। ऐसे ही 20-25 बी टेक ट्रेनी 10,000 रुपये में हैं। दोनों के 300 रुपये भोजन ,चाय , कपड़ा , साबुन के हर महीने काटते हैं। फैक्ट्री में आई टी आई को नहीं रखते। ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 600 वरकरों को हैल्पर ग्रेड और 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम 30-32 रुपये प्रति घण्टा और 3½ घण्टे का प्रतिदिन। घर से लौटते हैं तब टेम्परेरी वरकरों के ई एस आई तथा पी एफ नम्बर बदल देते हैं — फण्ड के पैसे मिल जाते हैं।

हरसोरिया हैल्थकेयर (110-111 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित) फैक्ट्री में 250 परमानेन्ट मजदूर और चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1000 वरकर 11-11 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सब को दुगुनी दर से परन्तु परमानेन्ट को दी जाती पे-स्लिप में ओवर टाइम दिखाते नहीं हैं। तनखा हर महीने देरी से, नवम्बर के पैसे टेम्परेरी वरकरों को 25 दिसम्बर को अवैध घोषित किये जा चुके नोटों में दिये गये और संग-संग 1000-2000 रुपये एडवान्स भी दिये। परमानेन्ट की तनखा बैंक खातों में जाती है पर मैनेजमेन्ट 25 दिसम्बर को बोली कि अवैध घोषित नोटों में नवम्बर की तनखा ले लो और साथ ही एक-दो महीने की तनखा एडवान्स भी ले लो। सब परमानेन्ट वरकरों ने मना कर दिया हालाँकि यह 250 दो यूनियनों में बँटे हैं। टेम्परेरी वरकरों को कम्पनी तनखा के साथ ओवर टाइम के पैसे देती है क्योंकि उन पर भरोसा नहीं है, छोड़ जायेंगे। जबकि, परमानेन्ट मजदूरों को अक्टूबर तथा नवम्बर के ओवर टाइम के पैसे दिसम्बर-अन्त तक नहीं दिये हैं — हालाँकि परमानेन्ट की तनखा 14000 रुपये ही है पर मैनेजमेन्ट अनुसार "जायेंगे कहाँ ?"

ट्रैक कम्पोनेन्ट्स (21 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में 10-10 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम मात्र 30 रुपये प्रति घण्टा। परमानेन्ट मजदूर 20-25 हैं। और , 600 टेम्परेरी वरकरों में से 150 को 5 से 15 दिसम्बर के दौरान यह कह कर निकाला है कि 2 जनवरी से इसी कार्ड पर ले लेंगे।

सरगम एक्सपोर्ट (210 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित) फैक्ट्री में कार्यरत 300 मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और सब के बैंक खाते हैं पर नवम्बर की तनखा 30 दिसम्बर तक नहीं दी है। कई बार वरकर मैनेजमेन्ट के पास गये हैं और हर बार दो दिन बाद, दो दिन बाद का आश्वासन।

हुबरसुन्नर (124-125 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में जून 2016 में एक से चार महीने का ब्रेक दिया और रीज्वाइनिंग पर आधी तनखा दी। यहाँ 35-40 परमानेन्ट मजदूर और 700-800 टेम्परेरी वरकर सप्ताह में 5 दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। प्रतिदिन 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। एक ठेकेदार कम्पनी महीने में 4-6 घण्टे ओवर टाइम के खा जाती है।

टेढापन

भारती एग्जिम (बी-303 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित) फैक्ट्री में कार्यरत 100 मजदूरों से 15,200 रुपये तनखा पर हस्ताक्षर करवाते हैं। बैंक से वरकर के फोन पर मैसेज आता है 14,934 रुपये का — ई एस आई के 266 रुपये काट कर , पी एफ नहीं है। हर वरकर से ब्लैंक चेक पर साइन करवाते हैं और डायरेक्टर खुद बैंक से पैसे निकाल कर लाता है। ड्युटी सुबह 9½ से रात 9 की है और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मजदूर को 15-15 दिन पर 6200 रुपये देते हैं ओवर टाइम जोड़ कर (8 घण्टे के 340 रुपये अनुसार)।

एस पी एल (48 सैक्टर-6 , फरीदाबाद स्थित) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट , महीने के तीसों दिन। जाँच के लिये आई एक मैडम को बताया कि ओवर टाइम रोज 4 घण्टे होता है और पैसे सिंगल रेट से देते हैं तो उन्होंने टाइम ऑफिस वालों को बुला लिया। वे बोले कि नहीं मैडम, इसे पता नहीं है। रजिस्टर लाये और बोले कि देखिये 8 घण्टे ड्युटी है और 2 घण्टे ओवर टाइम। अगले दिन , 18 दिसम्बर को सुबह 9 बजे मजदूरों को एकत्र कर टाइम ऑफिस वाले बोले कि कोई पूछे तो कहना कि ड्युटी सुबह 8 से साँय 4 तक है और फिर दो घण्टे ओवर टाइम होता है जिसका भुगतान डबल रेट से है।

मैक्सशॉप (10 व 27 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। नवम्बर के ओवर टाइम के पैसे 3 दिसम्बर को अवैध नोटों में दिये। फिर 15 दिसम्बर तक के ओवर टाइम के पैसे 20 दिसम्बर को अवैध 500 रुपये के नोटों में दिये।

रॉयल टूल्स (74-75 सैक्टर-24 , फरीदाबाद स्थित) फैक्ट्री में कई वर्ष से जो 40-50 लोग कम्पनी रोल पर हैं उन्हें स्टाफ कहते हैं हालाँकि इनमें कुछ को हरियाणा सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन, 8070 रुपये की बजाय 6000-6200 रुपये तनखा है। इन स्टाफ वालों को दिसम्बर-आरम्भ में डायरेक्टर ने 5000 से 30,000 रुपये के अवैध घोषित हो चुके नोट दिये और कहा कि नये नोटों में बदलवा कर लाओ तब तनखा दी जायेगी। फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 9 , रात 1 , रात 3 बजे तक ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 300 मजदूर होण्डा दुपहियों और मारुति सुजुकी कारों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं।

वी एक्सिस (12 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से और महीने में 10-12 घण्टे खा जाते हैं। फैक्ट्री गेट पर अलग रजिस्टर , ठेकेदार के पास अलग रजिस्टर , सुपरवाइजर के पास अलग रजिस्टर। तनखा हर महीने देरी से, 25 तारीख तक। फण्ड के पैसे बहुत दिक्कत से मिलते हैं।

बढ़ती असुरक्षा कम्पनियों की

✶ ***टॉप्स सेक्युरिटी*** करीब 1000 गार्ड गुड़गाँव में कम्पनियों को सप्लाई करती है। गार्ड की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 10,500 रुपये — ई एस आई तथा पी एफ काट कर। तनखा हर महीने देरी से — अक्टूबर की 30 नवम्बर को दी थी और नवम्बर की 30 दिसम्बर तक नहीं दी है। ई एस आई कार्ड नहीं दिये हैं और छोड़ने पर गार्ड को फण्ड के पैसे नहीं मिलते।

✶ ***फ्रन्टलाइन सेक्युरिटी*** द्वारा दिल्ली में कम्पनियों को सप्लाई किये गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 11,000 रुपये। तनखा 20-22 तारीख को जा कर।

✶ ***जी 4एस (ग्रुप फोर) सेक्युरिटी*** ने फरीदाबद में करीब 1500 गार्ड सप्लाई किये हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई एस आई तथा पी एफ की राशि काट कर , प्रतिदिन 12 घण्टे पर कभी 11500 रुपये, कभी 12500 तो कभी 13000 रुपये देते हैं जबकि हर बार हाजिरी पूरी होती हैं। और , आई एम टी मानेसर में ग्रुप फोर मैनेजमेन्ट द्वारा कम्पनियों को सप्लाई किये अधिकतर गार्डों को 2016 का जनवरी तथा जुलाई का डी ए नहीं दिया है।

बहुत—ही कमजोर कम्पनियाँ

सेसासाइन (बी-205 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित) फैक्ट्री में 10-12 परमानेन्ट और 300 टेम्परेरी वरकर चेक बुक छापते हैं। रोज सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट और रात 3 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी काम। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। दिल्ली सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा, हैल्परों की 6500 रुपये और ऑपरेटरों की 7-8-9000 रुपये। तनखा देरी से, 17-20 तारीख को।

(शेष पेज तीन पर)

बोहरा मिल (मेन मार्केट, बल्लभगढ स्थित) फैक्ट्री में नवम्बर की तनखा हैल्परों को 5000 रुपये, पुरुष हैल्परों को 6000, ऑपरेटरों को 7000-7500 रुपये दी और डायरेक्टर बोला है कि दिसम्बर से 1000 रुपये बढायेंगे। सुबह 8 से रात 8½ की ड्युटी है, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं और मैनेजमेन्ट एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती।

सामूहिक कदम

डिगानिया मेडिकल (251 व 275 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में दिसम्बर-आरम्भ में एक टेम्परेरी वरकर बीमारी से उठ कर ए-शिफ्ट में ड्युटी के लिये गया तब उसे गेट पर रोक दिया। ए-शिफ्ट में कार्यरत टेम्परेरी वरकरों ने काम बन्द कर दिया। पाँच मिनट में ही एच आर वाले पहुँच गये। काम बन्द हुये 15 मिनट हुये थे कि रोके वरकर को ड्युटी पर ले लिया और आगे से ऐसा नहीं करने का आश्वासन दिया, छुट्टी पास किया करेंगे। चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 600 वरकर और 400 परमानेन्ट मजदूर काम करते हैं। परमानेन्ट वरकरों की दो यूनियन हैं जो आपस में भिड़ती रहती हैं और परमानेन्ट लोग टेम्परेरी वरकरों से कोई मतलब नहीं रखते। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। टेम्परेरी वरकरों को कहने को ओवर टाइम डबल रेट से है पर 5887 रुपये तनखा पर, 58 रुपये 60 पैसे प्रति घण्टा। टेम्परेरी की बेसिक तनखा 5887 रुपये पर ई एस आई तथा पी एफ 8071 पर काटते हैं। पे-स्लिप में एच आर ए, वाशिंग अलाउन्स आदि जोड़ कर 8071 रुपये बनाते हैं। और, टेम्परेरी की पे-स्लिप में ओवर टाइम के 10-12 घण्टे ही दिखाते हैं। परमानेन्ट मजदूरों की तनखा भी ज्यादा नहीं है, 10-12-14,000 रुपये और बेसिक 7600 जिस पर ओवर टाइम देते हैं। टेम्परेरी वरकरों को बोनस नहीं देते।

जे एल ऑटोपार्ट्स (14 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित) फैक्ट्री में 7 जनवरी को सुबह मजदूर गेट पर एकत्र हुये। आठ बजे शिफ्ट आरम्भ होती है और वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। तीन जिप्सी में पुलिस आई। मजदूरों ने बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन, 8070 रुपये की बजाय कम्पनी 5100 रुपये तनखा देती है। पुलिस फैक्ट्री के अन्दर गई। डेढ घण्टे बाद बाहर आ कर पुलिस वाले बोले कि मैनेजमेन्ट कह रही है कि तनखा नहीं बढायेंगे, काम करना है तो अन्दर जाओ, नहीं तो यहाँ से जाओ, फैक्ट्री गेट पर भीड़ मत करो। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में होण्डा और यामाहा दुपहियों के हिस्से-पुर्जे 500 मजदूर बनाते थे, दिसम्बर-आरम्भ से सुबह 8 से रात 8½ की एक शिफ्ट में काम होता है।

ग्रोवरसन्स एपरेल्स (135 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में 21 दिसम्बर को सुबह 9 बजे शिफ्ट आरम्भ हुई तब 400 मजदूरों ने काम शुरू नहीं किया। तनखा के लिये वरकरों से सवाल-जवाब में जनरल मैनेजर ने हाथ जोड़ लिये। काम बहुत है पर वरकर बैठे रहे और 4 बजे कम्पनी ने छुट्टी कर दी। फिर 22 दिसम्बर को भी 9 बजे हाजिरी लगने के बाद काम शुरू नहीं किया। ऊपर की मंजिल पर महिला वरकरों से जनरल मैनेजर की बहस पर सब मजदूर नीचे आ गये, नीचे वाले उनके साथ हो गये। गेट पर ताला लगा कर मजदूरों को रोका। भर्ती करने वाली मैडम बोली : ''पैसे आयेंगे तो सब को देंगे। बैंक खाते खुलने पर देंगे। कम्पनी की इनसल्ट मत करो, हँगामा मत करो। हम काम करने को नहीं कह रहे। अपनी-अपनी जगह जा कर बैठो।'' करीब 12 बजे कम्पनी की मैडम आई और ऊपर तथा नीचे वरकरों से अलग-अलग मिली। जनरल मैनेजर : ''पैसे हैं ही नहीं, दें कहाँ से?'' मजदूर : ''आपके पास तीन-चार कम्पनी हैं। कुछ तो ले कर आती।'' मैडम : '' बैंक से पैसे नहीं निकल रहे। एक जनवरी से पूरा करेंगे। कल कुछ के खातों में पैसे भेजेंगे।'' फिर चार बजे मैनेजमेन्ट ने छुट्टी की। टेलरों ने 23 को काम शुरू कर दिया पर अन्य मजदूरों ने 23 और 24 को काम नहीं किया, फैक्ट्री में बैठे रहे। मैनेजमेन्ट ने दोनों दिन 6½ बजे छुट्टी की और 24 दिसम्बर को बोली कि जिनके खाते खुल गये हैं उनमें सोमवार से पैसे भेजेंगे। सोमवार, 26 दिसम्बर को काम आरम्भ। कह रहे हैं कि ठेकेदार हटा दिये हैं, सब बन्दे कम्पनी की तरफ से कर दिये हैं, ग्रेड देंगे, जनवरी से सब पर ई एस आई तथा पी एफ लागू होंगे।

साझेदारी

✶ मजदूर समाचार की 15-16-17 हजार प्रतियाँ छापते हैं। आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है। दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर समाचार की बीस हजार प्रतियाँ प्रतिमाह आवश्यक लगती हैं। बाँटने में अधिक लोगों की साझेदारी के बिना यह नहीं हो सकेगा। सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों-साथियों को देने के लिये 10-20-50 प्रतियाँ हर महीने लीजिये और मजदूर समाचार के वितरण में साझेदार बनिये।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— मंगलवार, 31 जनवरी को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास सोमवार, 30 जनवरी को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— बुधवार, 1 फरवरी को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में जनवरी में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन नम्बर : 0129-6567014

व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

बहुत—ही कमजोर कम्पनियाँ.... (पेज दो का शेष)

इधर 29 नवम्बर को मिक्सचर मशीन पर एक्सीडेन्ट में एक के हाथ का मात्र आधा अँगूठा बचा है — कोहिनूर अस्पताल में कम्पनी इलाज करवा रही है। ई एस आई तथा पी एफ 80-85 मजदूरों में 20-22 के ही हैं।

आई टी ओ लैदर (428-429 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित) फैक्ट्री में 21 मजदूरों को अक्टूबर तथा नवम्बर की तनखा यह कह कर नहीं दे रहे कि ठेकेदार भाग गया है।

बेस्टन इलेक्ट्रोविजन (एयरटेक इलेक्ट्रोविजन) (बी-70 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित) फैक्ट्री में 100 मजदूरों में से 90 की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, तनखा दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम, 6500 रुपये। शुक्रवार , 30 दिसम्बर को साँय 4 बजे जाँच वालों के आने से पहले मैनेजमेन्ट ने 90 मजदूरों को फैक्ट्री के बाहर निकाला।

क्रु बी ओ एस (37 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित) लैदर फैक्ट्री में कार्यरत 800 मजदूरों की ई एस आई तथा पी एफ क्रु बी ओ एस के नाम पर जबकि सुपरवाइजरों की टेन्डरी कम्पनी के नाम पर। वर्ष 2012 और 2013 की पी एफ राशि कम्पनी ने जमा नहीं की है।

फैशन टेक (ए-32 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित) फैक्ट्री में 20 परमानेन्ट और 250 टेम्परेरी वरकर। सवेतन छुट्टी नहीं देते। सिर्फ सैम्पलिंग टेलरों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, प्रोडक्शन टेलरों को 200-300 रुपये कम देते हैं।

बांग्लादेश में मजदूर गतिविधियाँ

दिसम्बर 2016 में मजदूरों के खिलाफ युद्ध के दौरान के कानून बांग्लादेश सरकार ने लागू किये। राजधानी ढाका के आशूलिया औद्योगिक क्षेत्र में 12 दिसम्बर को विन्डी एपरेल्स फैक्ट्री के वरकर फैक्ट्री गये ही नहीं। गारमेन्ट फैक्ट्रियों के पीक सीजन में, महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम के समय में मजदूरों की अनुपस्थिति से बौखलाई मैनेजमेन्ट ने 121 वरकरों को नौकरी से निकाला। और, इन्डस्ट्रीयल एरिया की कई फैक्ट्रियों के दसियों हजार मजदूर फैक्ट्रियों में काम करने नहीं पहुँचे। डरी-घबराई अस्सी गारमेन्ट कम्पनियों की मैनेजमेन्टों ने 20 दिसम्बर को फैक्ट्रियों पर ताले लगा दिये। दो लाख मजदूर सड़कों पर। उत्पादन के संग-संग सड़कें भी थम गई। युद्ध की स्थिति। मजदूरों और मैनेजमेन्टों के बीच युद्ध में बांग्लादेश सरकार ने मजदूरों के खिलाफ युद्ध के दौरान के कानून लागू किये। आशूलिया औद्योगिक क्षेत्र में पुलिस के संग सेना। पुलिस अधिकारी के अनुसार 27 दिसम्बर से फैक्ट्रियों में उत्पादन पुनः आरम्भ हो गया।

गारमेन्ट कम्पनियों की एसोसियेशन, यूनियनें, बांग्लादेश सरकार, वालमार्ट-गैप-ज़ारा-एच एण्ड एम जैसे बायर, विश्लेषक, अर्थशास्त्री, विद्वान बहुत चिन्तित हैं।

मजदूरों के बारे में गारमेन्ट कम्पनियों की एसोसियेशन का प्रेजीडेन्ट, ''यूनियनों के जरिये ओनर्स एसोसियेशन अथवा सरकार को प्रस्ताव प्रस्तुत करने की बजाय वे काम से अनुपस्थित क्यों हुये ?''

मजदूरों की इन गतिविधियों को किन्हीं यूनियनों ने आयोजित नहीं किया था। बल्कि, यूनियनों की शिकायत है कि माँगों को स्पष्ट किये बगैर काम से अनुपस्थित होता गलत है। मजदूरों को नाथने के लिये इधर गारमेन्ट यूनियनों ने वेतन में तीन गुणा वृद्धि का माँग-पत्र सरकार और कम्पनियों की एसोसियेशन को दिया है।

बांग्लादेश सरकार में श्रम मन्त्री ने कहा है कि सरकार को मजदूरों की उत्तेजना के कारणों की जानकारी नहीं है। वरकरों ने अधिकारियों के सम्मुख कोई माँगें नहीं रखी। ऐसे में समझ में नहीं आ रहा कि समाधान कैसे किया जाये। यह सब शुरू कैसे हुआ और फैला कैसे इसके बारे में मालुम नहीं है। खुफिया पुलिस को इसका पता करने में लगाया है।

सिलेसिलाये वस्त्रों का उत्पादन बांग्लादेश में बहुत तीव्रता से बढ रहा है। गारमेन्ट प्रोडक्शन में विश्व में चीन के बाद बांग्लादेश आज दूसरे स्थान पर आ गया है। चालीस लाख वरकर गारमेन्ट फैक्ट्रियों में कार्यरत हैं और इनमें तीन चौथाई महिला मजदूर हैं।

इस सन्दर्भ में मार्च 2014 के मजदूर समाचार में : *'' बांग्लादेश की गारमेन्ट फैक्ट्रियों में मजदूरों द्वारा अचानक कई फैक्ट्रियों में एक साथ काम बन्द करना नियमित-सा बन गया है। काफी बड़े पैमाने पर मजदूरों के बीच तालमेल रहते हैं और कई दिन तक कई फैक्ट्रियों में उत्पादन बन्द रहता है। कोई नेता नहीं होता। कोई यूनियन नहीं होती। समझौता वार्ताओं के लिये सामने कोई नहीं होता। किससे बात करें ? .... मजदूरों को नाथने के लिये अमरीका सरकार की संसद ने सलाह दी : यूनियनें स्थापित करो। अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आई एल ओ) ने सुझाव दिया : यूनियनों को प्रोत्साहित करो। बांग्लादेश सरकार ने कहा : यूनियनें बनाओ। विश्व की बड़ी यूनियनों ने बांग्लादेश में यूनियनों से हाथ मिलाया है। गारमेन्ट मजदूरों के बीच 2012 में दो यूनियन रजिस्टर्ड थी जबकि अब* [2014—आरम्भ में] *61 यूनियनें पंजीकृत हैं। .....''* और, दिसम्बर 2016 में मजदूर छुट्टे हैं। कम्पनियों-यूनियनों-बायरों-सरकारों के लिये मजदूर अबूझ पहेली हैं।

मजदूरों ने किन्हीं माँगों पर सहमति नहीं बनाई थी। कोई प्लान नहीं था। वरकरों ने कोई मीटिंगें नहीं की थी। अलग-अलग फैक्ट्रियों में कार्यरत मजदूर भारी सँख्या में एकत्र हुये थे। वरकरों के इन कदमों के पीछे कोई पूर्व-स्थापित एकता नहीं थी। यह मजदूरों को होना था, the workers' very being, जो इन गतिविधियों को आधार है। वरकरों के बीच अनेकानेक प्रकार के जोड़ों की भूमिका सहायक वाली। और यह बांग्लादेश की विशेषता नहीं है। दुनिया-भर में वरकरों, वैश्विक मजदूरों, ग्लोबल वेज वरकरों की ऐसी गतिविधियों ने आज को अत्यन्त जीवन्त बना दिया है।

प्रश्न—उत्तर

✶मैं कौन हूँ ?

मैं सात अरब का एक अंश हूँ।

✶मेरे पूर्वज कौन हैं ?

सात अरब के पूर्वज मेरे पूर्वज हैं।

✶मेरे वारिस कौन होंगे ?

आशावान हूँ कि सात अरब के वारिस मेरे वारिस होंगे।

✶क्या यह सात अरब सब एक जैसे हैं ?

नहीं। सात अरब में कई सामाजिक समूह हैं जैसे किसान, दस्तकार, दुकानदार, मैनेजमेन्ट, मजदूर।

✶तो फिर, मजदूरों पर ही ध्यान केन्द्रित क्यों ?

इन दो सौ वर्षों में मजदूरों का ही वह सामाजिक समूह है जो एक छोटे-से क्षेत्र में उत्पन्न हो कर पूरी पृथ्वी पर उपस्थित हो गया है। जबकि, किसानी-दस्तकारी की सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या तीव्र से तीव्रतर हुई है।

✶क्या ज्यादा सँख्या में हैं इसलिये मजदूर महत्वपूर्ण हैं ?

नहीं। विश्व में ज्यादा सँख्या में तो मजदूर इन पच्चीस-तीस वर्ष में हुये हैं। उत्पादन में मजदूरों द्वारा दस्तकारों की जगह लेना आरम्भ होने के समय से ही मजदूरों पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता पैदा हो गई थी। दो सौ वर्ष से संसार में मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन सम्पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया की धुरी बना है।

✶तो फिर, मजदूरों पर ध्यान केन्द्रित करने के कारण क्या हैं ?

मजदूरों में दो महत्वपूर्ण बातें संग-संग रहती हैं। एक है मजदूरों का बेचारे, असहाय, दमन, शोषण के शिकार होना। दूसरी है मजदूरों का होना ही उन्हें हर प्रकार की उँच-नीच, भेदभाव, दमन, शोषण से जूझने में ले जाता है। मजदूरों का बेचारगी वाला पहलू भलेमाणसों की दया भावना को उभारता है और काँइयाँ लोगों को आसान शिकार की तरह आकर्षित करता है। जबकि, मजदूरों का होना ही उन्हें जो है उसका विरोध करने के संग-संग नये सम्बन्धों को बनाने, नित नई रचनाओं के प्रयासों में लगाता है। सार है : कोई मजदूर हो ही क्यों ? और, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन के स्थान पर क्या ? विशेषकर फैक्ट्री मजदूर सामूहिक तौर पर समाधान की प्रक्रिया में रहते हैं।

✶आज स्थितियाँ कैसी हैं ?

मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन की सामान्य प्रक्रिया ही पृथ्वी पर जीवन को दाँव पर लगा रही है। और, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन विश्वव्यापी बनने के संग अधिकाधिक नाकारा हो गया है तथा अधिकाधिक लड़खड़ा रहा है। मजदूर, वैश्विक मजदूर, ग्लोबल वेज वरकर कब्र खोद चुके हैं और दफनाने की प्रक्रिया में होने के संग-संग नई रचना की भूमिका में हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।